॥ श्री चंद्रप्रभु देवाय नमः ॥

श्री चंद्रप्रभु दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र

मांडल

ता. अमलनेर, जि. जलगांव (महा.)

परिचय एवं पूजा

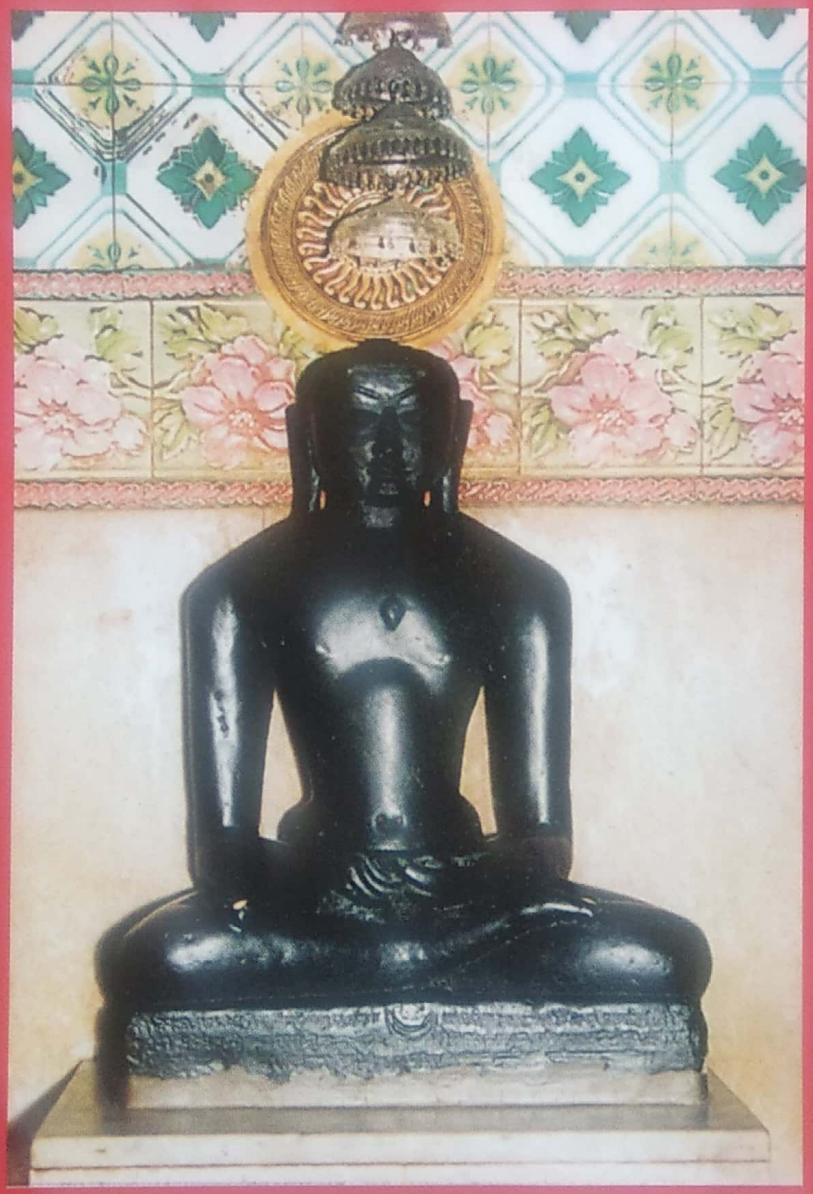

श्री १००८ चंद्रप्रभु भगवान (मूलनायक) मांडल-महा.

ता. अमलनेर, जि. जलगांव

Scanned with CamScanner

श्री १००८ चंद्रप्रभु दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र मांडल (जलगांव-महा.)

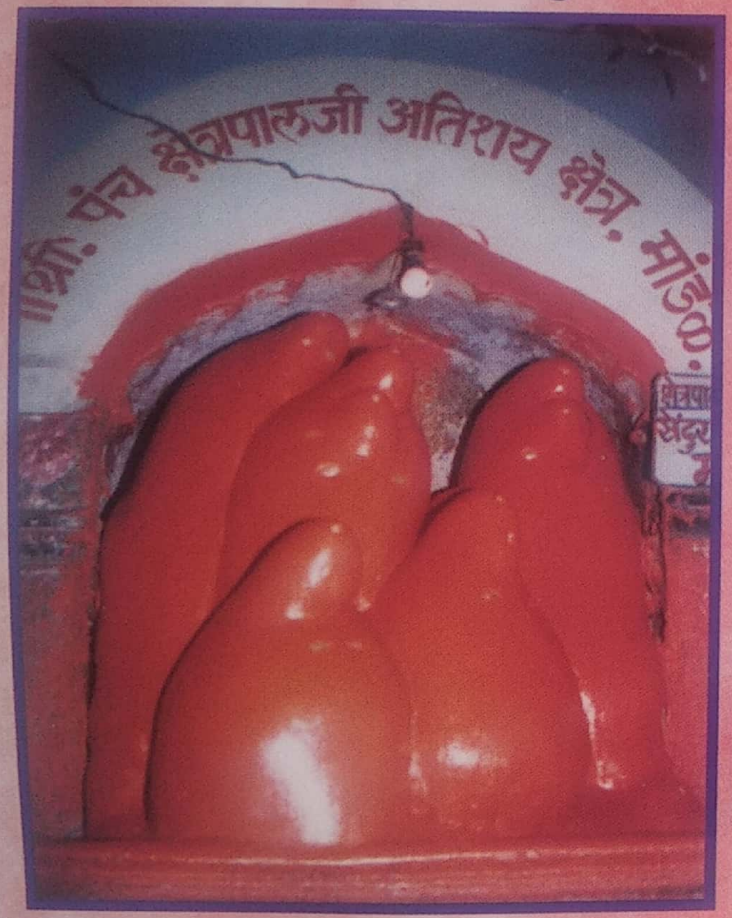

पंच क्षेत्रपाल बाबा

मुनि सुव्रतनाथ भगवान, चंद्रप्रभु भगवान अजितनाथ भगवान

Scanned with CamScanner

छठवीं पुण्यतिथी पर श्रद्धा-सुमन

आपने सबको दिया दुलार, आपकी स्मृतियाँ हैं अब आधार।
आपकी कर्म प्रेरणा हैं हमारी, आपका व्यवहार हैं हमारा सूत्रधार॥

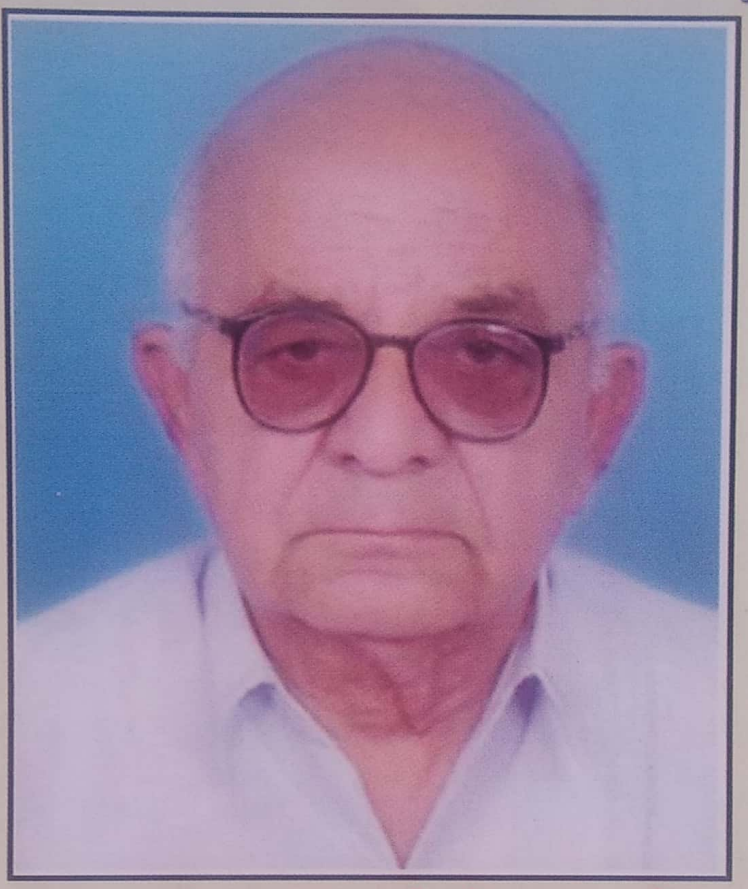

स्व. श्री नानाभाई ढोलूसा जैन

बेटावद (शिंदखेडा, महा.)

जन्म- दि. १२-२-१९३७

स्वर्गवास- दि. ११-११-२०१३

सौजन्य

सौ. अलका शैलेश कापड़िया सूरत, (पुत्री)
श्री शैलेश डाह्याभाई कापडिया सूरत, (दामाद)
प्रमोद शैलेश कापडिया सौ. मीनी प्रमोद कापडिया
मयंक शैलेश कापडिया सौ. स्मीता मयंक कापडिया
विवान प्रमोद कापडिया

११-११-२०१९

Scanned with CamScanner

हमारे नानाजी नानाभाई जैन की छठवी पुण्यतिथी पर

श्रद्धा-सुमन

जो जन्म लेकर आया हैं उसका मरण निश्चित हैं। आत्मा अमर हैं पर वह पृथक-पृथक देह धारण कर अपने अच्छे कर्मों से सिद्धलोक की यात्रा सुनिश्चित कर अपना चक्र पूरा करते हैं। मानव देह धारण कर्ता अपने कर्मों से इस यात्रा का सुफल शीघ्र प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त कर लेता हैं।

हमारे पर दादाजी स्व. ढोलूसा जैन के सुपुत्र श्री नानाभाई जैन बेटावद (शिंदखेडा)ने ७३ वर्ष की उम्र में वर्ष २०१३ में हृदय-गति रूक जाने से स्वर्गवास हो गया। आपकी अचानक मौत की खबर सुनकर सारा गाँव, समाज को विश्वास ही नहीं हो रहा था कि हमारे नानाजी अब हमारे बीच नहीं रहे।

नानाजी का छोटा परिवार सुखी और संतुष्ट परिवार रहा हैं हमारे नानीजी एक कुशल गृहिणी हैं वो नानाजी के हर सुख-दुःख में उनका हमेशा साथ देती थी। आपके एक पुत्री और एक पुत्र हैं। आप बचपन से ही सामाजिक और धार्मिक कार्यों में अग्रणी रहते थे। आप अपने गाँव के स्कूल में वाईस प्रेसिडेंट की पदवी पर कार्यरत थे। नानाजी बेटावद में ५० साल से तम्बाकू और कपडे का व्यापार करते थे। आप व्यापारिक विकास के साथ-साथ सामाजिक, दिन-दुखियों की मदद करने में हमेशा तत्पर रहते थे।

बेटाबद से ९ कि.मी. दूर मांडल गांव में श्री १००८ चन्द्रप्रभु दि. जैन मंदिर १२०० साल पुराना हैं। पीढीयों से इस मंदिर के ट्रस्टी हमारे पर नानाजी ढोलूसा जैन थे उनके बाद हमारे नानाजी ने कार्यभार संभाला और अब उनका बेटा सुनील जैन (हमारें मामाजी) संभाल रहे हैं।

दि. १३-१-१९९९ में प.पू. १०८ गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर जी महाराज पधारे थे। उन्होंने चन्द्रप्रभु भगवान एवं पंचमुखी क्षेत्रपाल का अतिशय देखकर मंदिर को **अतिशय क्षेत्र** घोषित किया।

आप ज्यादा पढ़े लिखे नहीं थे फिर भी पढ़ाई के प्रति आपका लगाव बेमिसाल था। आप हमारे प्रेरणास्रोत थे। आपके मार्गदर्शन एवं प्रेरणा से आपके पुत्र सुनिल ने उस समय बी.एस.सी बीएड ग्रेज्यूएशन किया और उसी स्कुल में आध्यापक में कार्यरत थे। इसी तरह आपके मान-सम्मान और प्रतिष्ठा को ऊँचाई तक पहुँचाया हैं। आपकी सुपुत्री की शादी सूरत निवासी मूलचंद किसनदास कापडिया के पौत्र शैलेश कापडिया के साथ हुई। हमारे पापा १२१ वर्षों से प्रकाशित **जैनमित्र** साप्ताहिक के संपादक एवं दिगम्बर जैन पुस्तकालय एवं जैन विजय प्रिन्टींग प्रेस का सुचारू रूप से संचालन करते हैं। आप अपने पीछे भरा-पूरा और समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं। दिवंगत आत्मा को सद्गति प्राप्त होवें, और नानाजी के छठवी पुण्य तिथी पर हमारे परिवारकी तरफ से **श्रद्धा-सुमन** अर्पित करते है।

- आपके लाडले नाती

प्रमोद : मयंक : विवान कापडिया

दि. ११-११-२०१९

Scanned with CamScanner

अतिशय क्षेत्र मांडलगांव (महा.) का संक्षिप्त परिचय

वीतरागी देवो हमेशा घने जंगलों, पहाड़ों या छोटे-छोटे गांवों में ही बसे हुए हैं। उन्हीं में से महाराष्ट्र राज्य में अमलनेर तालुका और जलगांव जिले में एक छोटा-सा गांव **मांडल नगरी,** जो पूर्व खानदेश के नाम से ही प्रचलित हैं। जो पांजरा नदी के विशाल तट पर बसा हुआ १५०० वर्ष पुराना अति प्राचीन दिगम्बर जैन मंदिर हैं। जिसमें चतुर्थकालीन मूलनायक भगवान चंद्रप्रभु की अतिशय प्राचीन मूर्ति अति चमत्कारी एवं मनको प्रसन्न करनेवाली एवं मनोकामना पूर्ण करनेवाली मनमोहक प्रतिमा हैं। मूलनायक चंद्रप्रभु के दायीं तरफ श्री १००८ अजितनाथ भगवान तथा बायीं और १००८ मुनिसुव्रतनाथ भगवान विराजमान हैं और अतिशय करनेवाले पंचक्षेत्रपाल बाबा भी अत्यन्त जागृत हैं। यहां के मंदिर के अतिशय का अनुभव तो यहां के स्थित श्रावकगण और मंदिर के पास-पड़ोशवाले अजैन श्रावकों को काफी समय से हो रहा हैं। लेकिन श्रावक की बातों पर विश्वास कौन करेगा? वेदी के पिछले भाग में दीवाल की अलमारी में पद्मावती देवी एवं पास में चन्द्रप्रभु भगवान की यक्षिणी ज्वालामालिनी देवी विराजमान हैं। एक तरफ झालिये में, पुरानी चरणपादुका विराजमान हैं।

एक वेदी पर पंच क्षेत्रपाल बाबा विराजमान हैं, जय, विजय, अपराजित, भैरव व मणिभद्र ये पांच क्षेत्रपाल विराजमान हैं। जो आज भी इस मंदिर में जागृत हैं। अमावस्या की आधी रात को नृत्य, गायन, डमरू, घुंघरू आदि की आवाजे सुनाई देती हैं और ऐसा लग रहा हैं कि मूलनायक भगवान की पंच क्षेत्रपाल बाबा आरती करते होंगे और मंदिर में मूलनायक भगवान का दिव्य प्रकाश प्रकाशित होकर अदृश्य हो जाता हैं। इस पंच क्षेत्रपाल का बहुत ही अतिशय एवं चमत्कार हैं।

यह मंदिर पहले छोटा-सा लकड़ी का बना हुआ था, वि.सं. २४४८ में सूरतगद्दी के भट्टारक सुरेन्द्रकीर्तिजी दर्शन के लिए यहां पधारे। मंदिर को जीर्ण-शीर्ण देखकर मंदिर के जीर्णोद्धार की चर्चा श्रावकों से की, श्रावकों का न्याय से कमाया हुआ धन मंदिर जीर्णोद्धार में लगा और एक विशाल जिन मंदिर पक्का चूना व इंटों का शिखरबंध तैयार हो गया। वेदी में पुनः भगवान को विराजमान कर दिया गया। इसी मंदिर में प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथ भी जीर्ण-शीर्ण अवस्था में हैं। वहीं जिन मंदिर अभी वर्तमान में हैं।

Scanned with CamScanner

व्यापार के अभाव में सारे के सारे दिगम्बर जैनी मांडलगांव को छोड़कर अन्यत्र व्यापारार्थ चले गये, वर्तमान में अभी मात्र तीन ही दिगम्बर जैनियों के घर हैं, एक पूजारीजी का और दो अन्यका, यहां स्थानकवासी श्वेतांबर जैनों के घर अनेक हैं, जैनेत्तरों में करीब सभी जाति के लोग यहां बसे हुए हैं।

यहां के मंदिर में मूलनायक के रूप में जैन धर्म के अनुसार आठवें तीर्थंकर चंद्रप्रभु विराजमान हैं। चंद्रप्रभु भगवान काशी देश के चन्द्रपुरी नगर में चैत्र कृष्ण पंचमी को महासेन राजा की रानी लक्ष्मणा के गर्भ में आए।

सौधर्मादि समस्त चतुर्निकाय देवों ने चन्द्रपुरी में आकर भगवान का गर्भ कल्याणक उत्सव पूर्वक मनाया। पौष कृष्णा एकादशी को चंद्रप्रभु भगवान ने जन्म ग्रहण किया। इंद्रों ने व समस्त देवों ने बालक चंद्रप्रभु को ऐरावत हाथी पर विराजमान करके सुदर्शनमेरू पर ले गए। चंद्रशिला पर विराजमान कर प्रभु का एक हजार आठ क्षीरसागर का जल कलशों में भरकर अभिषेक किया। इंद्र ने नामकरण किया, जन्माभिषेक महोत्सव करने के बाद भगवान को पुनः माता के पास लाकर माता के गोद में विराजित किया। बालकुमारों को क्रीड़ा के लिए देवों को रखकर देव देवलोक चले गए।

समय पाकर भगवान चंद्रप्रभु राज्य वैभव को भोगकर एकदिन भोगों से विरक्त हो वैरागी बने। लोकांतिक देव भगवान को संबोधने करने के लिए आए और भगवान आप बहुत अच्छा कर रहे हैं ऐसा कहकर चले गये। इंद्रादिक सारे के सारे देव भगवान को दीक्षा के लिए पालकी में विराजमान दीक्षा वन में ले गए। भगवान ने वहां पौष कृ. ११ को दीक्षा ग्रहण कर ली। भगवान ने घोर तपश्चरण किया और फाल्गुन कृ. ७ को केवलज्ञान प्राप्त किया। इंद्र ने समवशरण की रचना की, भगवान ने दिव्योपदेश दिव्यध्वनि के द्वारा भव्य जीवों को उपदेश दिया। एक हजार वर्ष तक भगवान ने देश-देशांतर में घूमकर भव्यजीवों को उपदेश दिया, धर्मतीर्थ की प्रवृत्ति चलाई, अनेक जीवों का कल्याण किया।

फिर भगवान ने धर्मोपदेश देना बंध कर योग निरोध किया। फाल्गुन शु. ७ को भगवान अष्टकर्मों से रहित होकर मोक्षपुरी को गए, याने मोक्ष को गये। भगवान चंद्रप्रभु सम्मेदाचल पर्वत पर से मोक्ष ए, देवों ने मोक्ष कल्याणक मनाया।

चंद्रप्रभु भगवान के शासनरक्षक शासनदेवता, श्यामयक्ष व ज्वालामालिनी देवी हैं। इस मांडलगांव में भी मूलनायक चंद्रप्रभु भगवान ही हैं। इस मंदिर में

Scanned with CamScanner

समय-समय पर देव लोग अपने परिवार सहित आकर भगवान की पूजा-अर्चना-भक्ति-नृत्यादि सुंदर-सुंदर वाद्यो ध्वनि से करते हैं। तब मंदिर में दिव्य प्रकाश ही प्रकाश फैल जाता हैं। दिव्यवाद्यों की (बाजे) आवाज आसपास के लोगों को भी सुनाई देता हैं, विशेषकर प्रत्येक महिने को अमावस्या को यह शब्द व प्रकाश दिखाई देता हैं और सुनाई देता हैं। आसपास के लोगों को पूर्णतः यहां का अतिशय मालूम हैं।

अनेक चमत्कार

मंदिर में सीधे हाथ की दीवाल से ही लगकर अजैन गृहस्थ का मकान हैं। मकान की छत पर अजैन बालक सो रहा था, उस दिन अमावस्या का दिन था। अचानक रात्रि में बारह बजे घंटे बजने की आवाज सुनाई देने लगी। दिव्य प्रकाश फैल गया, जय जयकारा शब्द सुनाई देने लगा। वह लड़का अचानक जाग गया, मंदिर जी में से जोर-जोर की आवाज सुनकर डर गया और छत पर से ही नीचे कूद गया और भाग गया।

एकबार इस नगरी में स्थानकवासी साधु-साध्वियों का संघ आया। पहले इनका स्थानक नहीं था, इसलिए मंदिरजी में व पास के कमरों में साधु-साध्वियों को ठहरा दिया गया। उसदिन भी अमावस्या थी, वही रात्रि में कुंडीया बजने लगी, ठहरी हुई साध्वियाँ डर गई। प्रातः ही डरके मारे गभराकर विहार की आगे तैयारी कर ली। श्रावकों के पूछने पर साधु-साध्वियों ने कहा कि न जाने क्या बात हैं रात चोर आए थे या क्या हुआ। मंदिर में से शब्द आ रहा था। हमारे कमरों की कुंडीया किसने खटखटाई आदि हम सबको भय लग रहा हैं। हम यहां नहीं ठहरेंगे, आगे विहार करेंगे। तब श्रावकों ने कहा कि महाराज साब डरने की जरूरत नहीं, यह मंदिर जाग्रत मंदिर हैं, यहां ऐसा चमत्कार होता हैं। इस मंदिर में चमत्कार होता हैं, देवलोग आते हैं अमावस्या थी कल, इसलिए ऐसा हुआ। तब सब का डर गया और संघ कुछ दिन और ठहरा।

मूछवाला सर्पदर्शन

यहां के श्री गुलाबचंदजी डुमनदास जैन पूजारीजी बताते हैं कि एक बहुत बड़ा सात-आठ फूट का सांप मंदिरजी में दिखाई दिया। लाईट नहीं थी, मात्र दीपक का ही उजाला था, लोग डरने लगे, सांप को देखने के लिए आसपास के लोग एकत्रित हो गये। भयंकर नागराज था, कुछ लोगों ने नागरराज को पकड़ में लिए लोगों को बुलवा लिये। कितना ही प्रयत्न करने

Scanned with CamScanner

पर भी नागराज पकड़ में नही आये, सब लोग थक गये। वह नागराज मंदिरजी के अंदर ही घूमता हुआ क्षेत्रपालजी के पास आया और बाहर निकलकर न जाने कहां गायब हो गया फिर ढूंढने पर भी नहीं मिला। लोगों ने निर्भय होकर मंदिरजी में भगवान की आरती व भक्ति की।

वर्तमान आचार्य विद्यासागरजी के संघस्थ दो मुनिराज योगसागरजी और पवित्रसागरजी क्षेत्र पर दर्शन के लिए पधारे। दोनों ही मुनिराज रात्रि में मंदिरजी में ही सो गये। जैसे ही नींद आने लगी वैसे एक साधु आकर कहने लगे कि मुनिश्री उठ बेठो, सामायिक करो, सोओ मत, सोने का समय नहीं हैं सामायिक करने का समय हैं। इस प्रकार कईबार रात्रि में ऐसा हुआ। जब भी सोने के लिए आंक मींचते तब उनको या तो आचार्य विद्यासागरजी दिखता था। इस बात को पूजारीजी के पुत्र मास्टर अरविंदजी ने आचार्यश्री को बताया। क्षेत्र पर अनेक मुनिराज दर्शन के लिए पधारे, उनको क्षेत्र का कुछ न कुछ अतिशय दिखा ही, क्षेत्र पर मुनिश्री हेमसागरजी पधारे, मुनिश्री सिद्धांतसागरजी, मुनिश्री निजानंदसागरजी महाराज, मुनिश्री कनकऋषिजी महाराज, मुनिश्री पद्मसागरजी, श्रुतसागर, मुनिश्री केशवनंदिजी, मुनिश्री सुविधिसागरजी, मुनिश्री नेमीसागरजी, मुनिश्री रयणसागरजी का संघ, मुनि ज्ञानभूषण,मुनि अनेकांत सागरजी, आर्यिका मृदुमतिमाताजी का संघ, श्री कल्पवृक्षनंदिजी महाराज आदि पधारे। इन सब मुनिराजों को क्षेत्र का पूर्णतः अतिशय दीखा, तब यहां मंदिरजी के ट्रस्ट कार्यकर्ता श्रीमान सेठ अध्यक्ष बेटावत के नानाभाई ढोलुसा जैन व उनके पुत्र सुनीलजी व शेखर, भरत, भिकूसा जैन, बालचंद, अतुल जैन, दिपेश जैन, परेश जैन, अरविंद जैन, प्रवीण जैन, अनिल जैन, नीलेश जैन, रमेश जैन, प्रकाश, जीतु आदि सब मिलकर मेरे पास धुलिया में पधारे। नारियल चढ़ाकर प्रार्थना करने लगे कि महाराजश्री आपको संघ सहित मांडल चंद्रप्रभु दि. जैन मंदिर में पधारना हैं। क्षेत्र पर भगवान चंद्रप्रभु का जन्म कल्याणक मनाना हैं।

मैंने क्षेत्र परिचय जाना और अनुमति दे दी कि मैं संघ सहित प्रोग्राम के लिए अवश्य ही आऊँगा। उसीके अनुसार प्रोग्राम निश्चित हुआ, पत्रिकाएँ छपी, सर्वत्र आसपास के गांवों में आमंत्रण पत्रिका भेजी हई, मुख्य-मुख्य दानपतियों को भी आमंत्रित किया गया। दि. १०-१-९९ को संघ क्षेत्र मांडल पहुंच गया। संघ का पुष्पवृष्टि करते हुए स्वागत किया गया। जुलूस पूरे नगर में घुमाया, संघ मंदिरजी में पहुंचा, भगवान का दर्शन किया और स्थान पर ठहरा।

दि. १३-१-९९ को प्रातः श्रीजी का पालकी जुलूस निकाला गया। फिर

Scanned with CamScanner

मूलनायक भगवान का अभिषेक प्रारंभ हुआ। साधुओं की आहारचर्या हुई, सामायादिक होने के बाद संघ सहित संघ पांडाल में विराजमान हुआ। मंगलाचरण पं. संजयकुमार(बापु)ने किया। क्षेत्र परिचय व अतिशय को समाज के सामने रखा फिर भगवान चंद्रप्रभु का पंचामृताभिषेक की बोलियां हुई। इस दिन मुख्य अतिथिविशेष श्रीमान सेठ वीरेन्द्रजी डोटिया प्रतापगढ़वाले बने और जैनमित्र साप्ताहिक पत्रिका के संपादक श्री शैलेशजी कापड़िया सूरतवाले बने। अतिशय क्षेत्र का बोर्ड उद्घाटन श्री डॉ. बी.एस. पाटील आमदार ने किया, सर्वत्र जय जयकार होने लगा। मैंने यह क्षेत्र इस प्रकार चमत्कार वाला हैं इसलिए इस क्षेत्र को अतिशय क्षेत्र घोषित करता हूँ।

तालियों की गड़गड़ाहट का शब्द गूंजने लगा, जय जयकार होने लगा, बाजे बजने लगे, पुष्पवृष्टि होने लगी। प्रतिवर्ष इसी तरह क्षेत्र पर पौष कृ ११ को मेला लगेगा ऐसा सारी जैन-जैनेत्तर समाज ने स्वीकार किया। ये सारा कार्य होने पर हम सब मंदिरजी में गए, भगवान चंद्रप्रभु का पंचामृताभिषेक हुआ। सबका भोजन होकर उस दिन का प्रोग्राम समाप्त हुआ। सूरत से पधारे श्रीमान सेठ वीरेंद्रकुमारजी डोटिया प्रतापगढ़ की उनकी मातुश्री ने एक हॉल बनाने की स्वीकृति दी और भी दाताओंने घोषणा की। सारा का सारा प्रोग्राम निर्विघ्न और शांति से पूर्ण हुआ। दि. १५-१-९९ को आहार के बाद संघ का कापडणा के लिए विहार हुआ।

एक और चमत्कार

संघस्थ बा.ब्र. ग.आ. क्षेमश्री माताजी की तबियत कापडणा में जाकर बहुत खराब हो गई। मुझे बहुत चिंता हो गई, क्या करना चाहिए? कुछ समझमें नहीं आ रहा था। मांडल से सुनीलजी आये, मैंने उसको कहाकि माताजी की तबियत बहुत खराब हो गई हैं, आप मांडल क्षेत्र पर क्षेत्रपाल बाबा के पास नारियल फोड देना माताजी के नाम से, जिससे माताजी की तबियत शीघ्र ठीक हो। क्षेत्र पर आकर क्षेत्रपालजी को नारियल फोडा गया, माताजी ने भी क्षेत्रपालजी को याद किया। उसी रात्रि में क्षेत्रपालजी माताजी के पास आए, सिर पर हाथ फैरा, प्यार दिया और वापस चले गए। उसी समय से माताजी की तबियत में सुधार आया और मुझे चिंता कम हुई। दि. ५-२-९९ को चतुर्विध संघ को लेकर कापडणा से वापस मांडल आकर क्षेत्र दर्शन किए। इसी तरह इस क्षेत्र पर विराजमान क्षेत्रपालजी का महान चमत्कार हैं। दुःखियों का दुःख दूर करते हैं, मन चिन्तीत सभी काम पूरे करते हैं। भक्तों के मनकी भावनाओं को समझकर सारी भावना को पूरी करते हैं। प्रत्येक श्रद्धालु को

Scanned with CamScanner

श्रद्धा से ही यहां आना चाहिए, जिसकी भक्ति-भाव अच्छा होगा उसी का कार्य सिद्ध होगा। इस क्षेत्र पर सभी भक्तों को आना चाहिए। अपने चंचल लक्ष्मी का सद्-उपयोग करना चाहिए। अभी क्षेत्र पर बहुत कमी हैं, वो कमी दानियों के दान से ही हो सकती हैं। इसलिए सभी को यहां आकर धन-दान करना चाहिए।

इस क्षेत्र को प्रकाश में लाने के लिए कमेटी के कार्यकर्ताओं को क्षेत्र का विशेष प्रचार करना चाहिए। महाराष्ट्र खानदेश में यह पहला अतिशय क्षेत्र घोषित हुआ हैं, जितना ज्यादा प्रचार होगा उतना ही जल्दी से क्षेत्र का जीर्णोद्धार होगा। यह जिन मंदिर पूर्णतः दिगम्बर जैन मंदिर हैं, अधिकार भी दिगम्बर जैनों का ही हैं। क्षेत्र अधिकारियों को पूरा का पूरा ध्यान देकर अपने अधिकार की सुरक्षा रखें, सबको मेरा आशीर्वाद।

दि. १५-१-१९९९ - **गणाधिपते गणधराचार्य कुन्थुसागर**

॥ वितरागाय नमः ॥

मांडल, दि. १९-१-१९८२

परम पूज्य आचार्य श्री श्रेयांससागर महाराज जी को परम चरण कमलों में मुनि निजानंदसागर के नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु।

यहां मांडल नगरी में ६०० वर्ष पहले का दि. जैन मंदिर हैं। जिन मूर्तियां वितरागत पूर्वक विराजमान हैं। इसलिए आप जरूर पधारने की कृपा करना। पुराना मंदिर हैं और अतिशय भी हैं। अमावस्या के दिन घंटा बजने का, नृत्य का घूंघरु की आवाज सुनाई देती हैं। इसलिए ऐसे मंदिर का दर्शन करना चाहिए, फिर एकबार आपके चरणों में नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु

- मुनिश्री निजानंदसागर

Scanned with CamScanner

मेरे बाबा का अतिशय

कलिकाल सर्वज्ञ श्रीमद् वीरसेनाचार्य भगवानने श्री धवलाजी ग्रन्थमें एक प्रश्न उद्धृत किया कि जब समोशरण की गंधकुटी में स्वयं साक्षात् तीर्थंकर भगवान बिराजमान है और चारों संध्याओं में उनकी दिव्य ध्वनि खिर रही है। तब वहां चैत्यादी भूमियोंमें उनकी प्रतिमायें बिराजमान करने की क्या आवश्यकता है। उस प्रश्न का उत्तर भी स्वयं आचार्य भगवानने दिया और जिन प्रतिमा का महत्व बताते हुए कहा कि तीर्थंकर भगवान की प्रतिमा कल्याणकारी है। समवशरण में स्थित मानस्तंभ में बिराजमान जिन प्रतिमा के दर्शन से ही सर्व प्रथम मान का गलन होता मिथ्यात्व नष्ट होता है तब कहीं सम्यग्दर्शन होने पर साक्षात् तीर्थंकर भगवान के दर्शन प्राप्त होते हैं, अर्थात् वह प्रतिमा ही तीर्थंकर भगवान के दर्शन में निमित्त कारण है तथा तीर्थंकर जिनेन्द्र के निर्वाण के पश्चात उनकी प्रतिमायें ही संसारी जीवोंके पुण्यार्जन पाप शमन तथा रत्नत्रय की प्राप्तिमें प्रबलतम निमित्त है। यहां तक कि आचार्य भगवानने स्पष्ट कहा कि जिन प्रतिमा का दर्शन अर्चन स्तवन हमारे निकाचित श्रेणी के पाप कर्मों को भी नष्ट करनेमें समर्थ है। श्रीमद् पूज्यपाद स्वामि भी उसी बातका प्रबलतम समर्थन करते हुए कहते हैं कि-"विघ्नौधा प्रलयं यांति शाकिनी भूत पन्नगाः॥" विषं निर्विषतां यां ति स्तूयमाने जिनेश्वरैः। अर्थात् जिनेन्द्र भगवान की स्तुति करनेसे सम्पूर्ण विघ्नों का समूह प्रलय को प्राप्त हो जाता है, शाकिनी भूत पन्नग आदि के सभी उपद्रव शांत हो जाते हैं। अति तीक्ष्ण विष भी निर्विष हो जाता है। इत्यादिक अतिशय जिन प्रतिमाओं में घटित होने लगता है। वहीं प्रतिमा अतिशय युक्त प्रतिमा के नाम से पूज्य हो जाती है तथा वह क्षेत्र अतिशय क्षेत्र घोषित हो जाता है। ऐसे अनेक प्राचीन अर्वाचीन अतिशय क्षेत्र सम्पूर्ण भारत वर्षमें विद्यमान हैं। इन्हीं में से एक श्रीचन्द्रप्रभु दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र मांडल हैं, जो कि महाराष्ट्र प्रांतस्थ खानदेश में पांजरानदी के तट पर बसे मांडल ग्राम के मध्यमें स्थित है। और लगभग डेढ़ हजार (१५००) वर्षों से जिन शासनके अतिशय को दर्शा रहा है। यहां पांचो क्षेत्रपाल जागृत रूप में एक साथ विद्यमान है। वे अमावस्या के दिन स्वयं प्रकट/अप्रकट रूप में आरती स्तुति अर्चना करते हैं। घुंघरु, डमरू, घंटा,

Scanned with CamScanner

बंशी, वीणा, ढोल, नगाड़े, तुरही आदि अनेक सुन्दर वाद्यों की ध्वनि के साथ सुन्दर भक्तिनृत्य करते हैं। उस समय पूरे मंदिर में एक दिव्य प्रकाश फैल जाता है।

यहां आकर अनेक भक्तजनों की संकट आपदायें स्वयंमेव शांत हो जाती है। जो यहां रोते-२ आता है वो यहां से हंसते-२ जाता है। मैंने भी इस अतिशय का अनुभव किया है जब मैं अपने संघ (संघस्थ मुनिश्री कवीन्द्रनंदीजी, मुनिश्री कुलपुत्रनंदीजी, गणिनी आर्यिका राजश्री, आर्यिका क्षमाश्री व आर्यिका आस्थाश्री) के साथ इन्दौरसे विहार करते-२ सोनगीर आया तब संघस्थ गणिनी आर्यिका राजश्री माताजीका किड़नी संबंधी रोग अत्यधिक बढ़ जानेसे संघको सोनगीरमें ही रूकना पड़ा। उसी समय मांडलसे (ट्रस्ट मंडल) व नानाभाई जैन बेटावदसे अपने पूरे मंडल के साथ मेरे पास आये। मांडल क्षेत्रके चन्द्रप्रभु भगवान तथा पंचक्षेत्रपालजी का सम्पूर्ण इतिहास व अतिशय मुझे समझाया साथ ही श्री चन्द्रप्रभु भगवान के जन्म कल्याणक पर आयोजित वार्षिक मेले में संघ सहित सानिध्य देने का निवेदन किया। मैंने भी सहर्ष स्वीकृति प्रदान की इसी बीच ७-१-२००१ को राजश्री माताजी की दोनों किड़नी फैल हो गयी। छे घण्टे में चार अटेक आये, जिससे जीवन मरण का संशय उत्पन्न हो गया। उनकी जिव्हा पूर्णतया कट गयी तथा नेत्रों से दिखना बंद हो गया। उस समय मांडल वाले चन्द्रप्रभु का अतिशय सुनकर, देवास के गुरुभक्त वैद्य पं. जितेन्द्र शास्त्री (शर्मा) एवं देवास के ही गुरुभक्त संजय जैन राजश्री गृह उद्योगवाले ये दोनों महानुभाव मांडल में गये, वहां भगवान चन्द्रप्रभु के समक्ष घी की ज्योत जलायी उनके समक्ष और पंच क्षेत्रपाल देवके समक्ष नारियल वधारकर संकल्प किया कि है प्रभु हम आपके द्वारा पर माई (राजश्री माताजी) की ज्योति वापिस लेने आये हैं और जब तक हमारी माई की ज्योति वापिस नहीं आयेगी तबतक हम भी यहांसे नहीं उठेंगे । उस समय उनकी श्रद्धा भक्ति और भगवान के अतिशय से अतिशीघ्र माताजी की नेत्रज्योति वापिस आ गयी। उस समय पूरा सोनगीर गाँव मांडलवाले बाबा के जयघोषसे गुंजायमान हो गया। तत्पश्चात वार्षिक मेले में संघ सहित भगवान के दर्शनका सैभाग्य मिला तब क्षेत्र में प्रवेश करते ही एक आल्हाद, उल्लास, एक अपूर्व ऊर्जा अनुभव किया।

Scanned with CamScanner

प्राचीन आचार्यो ने जिन प्रतिमा का जो भी अतिशय आगम ग्रन्थो में उद्धृत किया है वह श्री चन्द्रप्रभु भगवान की प्रतिमा में यहां साकार दिखाई दिया तथा जिन शासन की रक्षा में लगे शासन की प्रभावना बढ़ाने वाले शासन रक्षक देवों का जाग्रत रूप देखकर, प्राचीन दिगम्बर जैनाचार्यो प्रणीत आगम के प्रति मस्तिष्क श्रद्धासे नतमस्तक हो गया। अत्यंत श्रद्धाभाव भरे वातावरण में भगवान का महामस्तकाभिषेक हुआ तत्पश्चात पंच क्षेत्रपाल देव का भव्यतम शृंगार हुआ।

त्रिदिवसीय विधानादिक मांगलिक कार्यक्रम हुए। भगवान की मनोहारी मूर्ति व अतिशय देखकर संघने पुनः अमावस्या को दर्शन पाने की भावना व्यक्त की और भगवान के अतिशय से सवा साल से पूर्व ही भगवान के पुनः दर्शन प्राप्त हुए। इत्यादि क्षेत्रके महान अतिशय हैं।

अतः इस अतिशय क्षेत्र का अत्याधिक प्रचार प्रसार होना चाहिए जिससे अधिकाधिक भव्यात्मा इन अतिशयवान, महान अतिशय क्षेत्रका दर्शन लाभ ले और अपनी सम्पूर्ण आधी व्याधियोंसे मुक्त होकर सम्यक धर्मको रत्नत्रय को प्राप्त कर सकें। इस हेतु क्षेत्र कमटी के सभी कार्यकर्ताओं को और अधिक कर्तव्य निष्ठ, निष्पक्ष, निस्वार्थ, निर्लोभ, सेवाभावी होना अनिवार्य है। तभी इस क्षेत्र का विकास, प्रचार, प्रसार संभव है। सभी कार्यकर्ताओं का अखंड संगठन ही विकास का मूलमंत्र है।

परम पूज्य प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य गणिनंदी

दि. ६-४-२००२

श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र गजपंथा (नासिक) महाराष्ट्र

वार्षिक मेला:- श्री १००८ चंद्रप्रभु भगवानका जन्म कल्याणक एवं तप कल्याणक पोष कृष्णा एकादशी, भव्य पालखी जुलुस एवं १०८ कलशोंसे अभिषेक पूजा, ध्वजा चढ़ाई जायेगी तथा भंडारा होगा।

मांडल अतिशय क्षेत्र पहुंचनेका मार्ग

अमलनेरसे २२ कि.मी. (मांडल जानेके लिए पांच बसें चलती है।) बेटावदसे ९ कि.मी., नरदाणासे २२ किमी. (धुलियासे कलम्बु ४ बसें वाया मांडल जाती है।) शिरपुरसे २ बसें वरला नवलनगर (नरदाणा बेटावद होकर मांडल जाती हैं।) अमलनेरसे सोनगिर छह बसें दिनमें चलती हैं, वाया मांडल होकर जाती हैं।

Scanned with CamScanner

श्री चन्द्रप्रभु दि. जैन ट्रस्ट मण्डल मांडल-आशीर्वाद

अत्यंत हर्षके साथ मैं अपनी भावना व्यक्त करता हूँ। श्री दि. जैन मंदिर मांडल में भगवानकी भव्य एवं मनोज्ञ तथा वीतरागता की उत्कृष्टता के साथ भगवान श्री चन्द्रप्रभु, भगवान श्री अजितनाथ और भगवान श्री मुनिसुव्रतनाथकी प्रतिमा बिराजमान है। जो करीब १५०० वर्ष प्राचीन है। यहाँ का क्षेत्रपालजी बाबा बड़े ही चमत्कारीक एवं अतिशय युक्त है। सुननेमें आया है यहाँ बहुत अतिशय होता है-लेकिन मैंने स्वयं यहाँके मंदिरका अनुभवमें है। इसलिए मैं इस मंदिर और क्षेत्रको अतिशय व्यक्त करनेका आदेश इस मंदिरके ट्रस्ट मण्डलको देता हूँ। ट्रस्ट मण्डल इस आदेशको ध्यान में रखते हुए क्षेत्रका विकास करे एवं क्षेत्रको अतिशय घोषित करें। इसी भावनाके साथ.....

ता. २८-९-९८ **आ. कल्पमुनि हेमसागर**

आचार्य सम्राट अतिशय योगी १०८ कुशाग्रनंदीजी महाराजजी इनके प्रथम शिष्य १०८ कनकऋषि महाराजजी प्रत्यक्ष अनुभव अभिप्राय श्री १००८ दि. जैन मंदिर चंद्रप्रभु, मुनि सुव्रत अजितनाथ, तीर्थंकर-

दूसरों के दुःखको अपना दुःख मानता वह महन्त है।
स्वयं के दुःख को जो दुःख नहीं मानता वह संत है॥

अपने सुखको जो दूसरोंके सुखके लिए स्वच्छ परिणाम से त्याग दे वे भगवंत है।

एक दूसरेको जोडनेका तरीका प्यार है। एक दूसरेको तोडनेका तरीका खार है॥
भले ही आप हमारे विचारोंसे सहमत न हो, पर यह मेरा अनुभव सिद्ध विचार है॥

-१००८ श्री चंद्रप्रभु दि. जैन मांडल ट्रस्ट

ता. १४-१२-९८ इतवार दिन शामको मेरा मंगल विहार १००८ श्री चंद्रप्रभु दि. जैन मंदिरमें हुआ। मंदिरमें पहुंचते ही जब भगवान चंद्रप्रभु मुनि सुव्रतनाथ और अजितनाथ भगवान अतिप्राचीन मूर्ति देखते ही इनके दर्शन होते ही सिद्धक्षेत्र जैसे प्रतिति हो गई और वहां अतिशय करनेवाले क्षेत्रपाल भी जाग्रत देवस्थान है, यह स्वयं अनुभवमें आया है। इसलिए इन मंदिर और क्षेत्रको अतिशय क्षेत्र है ही, ऐसेमें इन ट्रस्ट मंडलको उपदेश देता हूँ, शीघ्र ही इन क्षेत्रका विकास हो जावे इति आशिर्वाद।

१०८ कनकऋषि महाराजजी
आचार्य सम्राट अतिशय योगी १०८ कुशाग्रनंदी इनके प्रथम शिष्य

Scanned with CamScanner

मांडल दि. जैन अतिशय क्षेत्र के चंद्रप्रभु की पूजा

मांडल ग्रामके चंद्रप्रभुवर, सर्व श्रेष्ठ जिनराई।
भवाताप निवारण जिनवर, मैं पूजूं सुखदाई॥
चंद्रप्रभु जिननाथ हमारे, मन वांच्छित सुख देई।
आह्वानन थापुं मैं यहाँ पर, वसु कर्म नश जाई॥

ॐ ह्री मांडलगांव में स्थित श्री चंद्रप्रभु जिनाय अत्रावतरावतर। ॐ ह्रीं मांडलगांवमें स्थित श्री चंद्रप्रभु जिनाय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। ॐ ह्रीं मांडलग्राममें स्थित श्री चंद्रप्रभु जिनाय अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

गंगा का निर्मल नीर, प्रासुक झारी भरा।
भरि कनक कलश को धीर, आनन्द धार धरा॥
श्री चंद्रप्रभु जिनराज, भव दुःख शांति करो।
मम मेटो भव की रास, भव आताप हरो॥१॥

ॐ ह्री मांडलगांवस्थित श्री चंद्रप्रभुजिनाय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं.।

मलयागिरी चंदन लाय केशर रंग भरी।
प्रभु चरनन देत चढाय भव आताप हरी॥
श्री चंद्रप्रभु जिनराज, भव दुःख शांति करो।
मम मेटो भव की रास, भव आताप हरो॥२॥

ॐ ह्री मांडलगांवस्थित श्री चंद्रप्रभुजिनाय भवताप विनाशनाय चंदनं निर्व.।

सुवासित तंदुल लाय, कंचन थाल भरा।
प्रभु चरनन देत चढ़ाय, अक्षयपदको करा॥ श्रु चंद्र.३॥

ॐ ह्री मांडलगांवस्थित श्री चंद्रप्रभुजिनाय अक्षयपद प्राप्तेभ्यो अक्षतं निर्व.।

सुवासित फुल मंगाय, तुम ढींग ले आया।
जिन चरनन देत चढाय, आनंद भर आय॥ श्री चंद्र.४॥

ॐ ह्री मांडलगांवस्थित श्री चंद्रप्रभुजिनाय कामबाण विनाशनाय पुष्पं. निर्व.।

नानाविध मक्ष बनाय, थाली भर लाया।
प्रभु तुम ढींग देत चढाय, आनन्द अति छाया॥ श्री चंद्र.५॥

ॐ ह्री मांडलगांवस्थित श्री चंद्रप्रभुजिनाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं. निर्व.।

Scanned with CamScanner

दीपक ज्योति जलाय, सब विध तम को हरा।
मम सब विध मोह नशाय, आतम ज्योति करा॥ श्री चंद्र.६॥

ॐ ह्री मांडलगांवस्थित श्री चंद्रप्रभुजिनाय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं. निर्व.।

चंदन घीस धूप बनाय, प्रासुक ले आया।
अगनी में खेउं साज, वसु विध कर्म गया॥ श्री चंद्र.७॥

ॐ ह्री मांडलगांवस्थित श्री चंद्रप्रभुजिनाय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व.।

सब ऋतुके फलको लाय, प्रभुजीकी पूजा करूं।
मम मोक्ष प्राप्ति हो जाय, शिवफल प्राप्ति करूं॥ श्री चंद्र.८॥

ॐ ह्री मांडलगांवस्थित श्री चंद्रप्रभुजिनाय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व.।

वसु विधि द्रव्य मिलाय तुम ढींग लाय धरूं।
मम अष्टकर्म नश जाय, आनन्द भाव करूं॥ श्री चंद्र.९॥

ॐ ह्री मांडलगांवस्थित श्री चंद्रप्रभुजिनाय अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घं निर्व.।

पंचकल्याणक अर्घ - दोहा

चैत्र कृष्ण की पंचमी, गर्भ में आये नाथ।
अष्टद्रव्य से पूज हूँ, शांति पाऊँ आज॥२॥

ॐ ह्री चैत्र कृष्ण पंचम्यां गर्भ मंगल प्राप्ताय श्री चंद्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष कृष्ण एकादशी, जन्मे श्री भगवान।
अष्टद्रव्यसे पूज हूँ, शांति पाऊं आज॥२॥

ॐ ह्री पोष कृष्ण एकादश्यां जन्म मंगल प्राप्ताय श्री चंद्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घं. निर्व.।

पौष कृष्ण एकादशी, दीक्षा लीनी आप।
अष्टद्रव्य से पूज हूँ, शांति दे दो आप॥३॥

ॐ ह्री पोष कृष्णैकादश्यां निःक्रमण महोत्सव मंडिताय श्री चंद्रप्रभु जिनाय निर्व.।

फाल्गुन कृष्ण सप्तमी केवलज्ञान उपाय।
अष्टद्रव्य से पूज हूँ, मन में शांति पाया॥४॥

ॐ ह्री फाल्गुन कृष्ण सप्तम्यां केवलज्ञान मंडिताय श्री चंद्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घं निर्व.।

फाल्गुन शुद्ध सप्तमी मोक्ष गये जिनराय।
अष्टद्रव्य से पूज हूँ, शांति देओ नाथ॥५॥

ॐ ह्री फाल्गुन शुक्ल सप्तम्यां मोक्ष मंगल मंडिताय श्री चंद्रप्रभु जिनेन्द्राय निर्व.।

Scanned with CamScanner

मांडल ग्राम में स्थित हो, श्री चंद्रप्रभु भगवान।
प्रभु तेरी जयमाल को वर्णु मन हर्षाय॥
मांडल में जिनराज विराजे, दिव्य अतिशय होय विराजे।
चंद्रप्रभु है नाम तुम्हारा, चन्द्रपुरी के राजकुमारा॥
चन्द्रपुरी में जन्म लियो है, इन्द्रादिक उत्सव कियो है।
दीक्षा लेकर संयमधारा, भव सिन्धुसे किया कीनारा॥
सम्मेदगिरि से मोक्ष पधारे, देव-देवियाँ सब गुण गावे।
अष्टद्रव्य ले हम सब आये, पूजाकर मन में हर्षाये॥
महाराष्ट्र में खानदेश है, मांडलगांव की शोभा अति है।
पांजरा नदी के निकट बसे हो, भक्तगणों के प्रभु तुम्ही हो॥
मंदिरकी शोभा अति भारी, प्राचीन मूर्ति प्रभु तुम्हारी।
सतरहसो है वर्ष पुरानी, प्रभू मूर्ति तेरी पहिचानी॥
दिव्य अतिशय है प्रभु तेरा, दर्शन करे मिटे भवफेरा।
नानाविधका अतिशय जानो, सब मिलकर मनमें हर्षानो॥
अमावस्या को अतिशय भारी घंटा, वाद्य बजे सुखकारी।
देव देविया दर्शन आवे, पूजा कर मनमें हर्षावे॥
क्षेत्रपाल पांचो ही आवे, अतिशय कर मनमे सुख पावे।
भक्त गणोंकी आशा पूरी, करते प्रभू मेटो जग फेरी॥
यहां अतिशय क्षेत्रपाल का, मन वांछित करते सब जगका।
प्रभु दर्शन साधुगण आये, अतिशय देख मनो हर्षाये॥
आसपास के सब नर-नारी, वर्णे अतिशय यहां का भारी।
जिन२ ने तुम अतिशय देखा, मिटे यहांसे दुःख की रेखा॥
श्रद्धा रखकर जो कोई आवे, जिनवर तेरे गुण को गावे।
कार्य सभीका ही हो जावे, भक्त सभी मन वांछित पावे॥
कुन्थुसागर आचार्यजी आये, मुनि-आर्यिका संघमें लाये।
प्रभु दर्शन कर सुखको पाये, प्रभुके अतिशयको दिखलाये॥

Scanned with CamScanner

पौष कृष्णैकादशी आया, जनेता को यहां पर बुलवाया।
उसी दिन मेला लगवाया, सबने मिल जयकार कराया॥
अतिशय क्षेत्र घोषित करवाया, जनता में एलान कराया।
हुआ अतिशय क्षेत्र यह भारी, प्रभु करते सबकी रखवाली॥
कुन्थु प्रभुवर शरणमें आया, भक्ति भावसे गुणको गाया।
मेरी इच्छा पुरी करना, भवसागरसे पार उतरना॥

अष्टद्रव्य ले हाथ में, जयमाला गुण गाय।
करूं पूर्ण यह अर्चना, कर दो भव दधि पार॥

ॐ ह्री मांडलग्रामस्थित श्री चंद्रप्रभु जिनेन्द्राय जयमाला पूर्ण अर्घं निर्व.।

शांतिधारा छोडकर, शांति करूँ जिनराज।
पुष्पांजलि अर्पण करूं, मनवांछित फल पाय॥

इति शांतिधारा, पुष्पांजलि क्षेपण।

♦♦♦

"चंद्रप्रभु पूजन"

रचनाकार प्रज्ञायोगी आ. श्री गुप्तिनंदीजी

(शुभ छन्द)

हे चन्द्र प्रभू गुण चन्द्रमणी चन्द्राकर शीतल भास रहे।
हे दुःखहर सुखकर चन्द्रप्रभु, गणधर मुनिवर तब पास रहे॥
पुष्पांजलि हाथों में लेकर आह्वान करने आया हूँ।
मम हृदय कमल में आ तिष्ठो, मैं वंदन करने आया हूँ॥

ॐ ह्री श्री मांडल अतिशय स्थित चंद्रप्रभु जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

कर्मो की चंचल कल्लोले, भवसागर में भटकती है।
उदधी समान लख चन्द्रप्रभु, सब शीघ्र शांत हो जाती है।
हे चन्द्रप्रभु मांडल वाले, मम जरा मरण का नाश करो।
जल निर्मल तुम चरणन् लाया, मम हृदय कमल में वास करो॥१॥

ॐ ह्री श्री मांडल अतिशय स्थित चंद्रप्रभु जिनेन्द्राय जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि.स्वाहा।

Scanned with CamScanner

कर्मों का दाह बड़ी भारी, हर क्षण संताप कराती है।
वह राग, द्वेष में जला, मम हृदय व्यथित कर जाती है।
हे चंद्रप्रभू मांडल वाले, मम पाप ताप सब नाश करो।
शीतल चन्दन चरणन लाया मम हृदय कमल में वास करो॥२॥

ॐ ह्री श्री मांडल अतिशय स्थित चंद्रप्रभु जिनेन्द्राय भव ताप विनाशनाय चंदनम् नि.स्वाहा।

हम राग द्वेष से क्षत विक्षत अक्षय सुख का कुछ भान नहीं।
भौतिक पदवीं में उलझ गये अक्षय पद का भी ज्ञान नहीं॥
हे चन्द्र प्रभु मांडल वाले मम भौतिक पद को विनशाओ।
मैं अक्षत पुंज चढ़ाता हूं निज अक्षय सुख को दर्शाओ॥३॥

ॐ ह्री श्री मांडल अतिशय स्थित चंद्रप्रभु जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये विनाशनाय अक्षतं नि.स्वाहा।

है काम अरि एक पाप पंक जग जीवन को भरमाता है।
इसके चुंगल में फंस प्राणी निज संयम रत्न गंवाता है॥
हे! चन्द्रप्रभु मांडल वाले मम काम रिपू का त्रास हरो।
जल भूमिज सुमन चढ़ाता हूँ मम अन्तर मन में वास करो॥४॥

ॐ ह्री श्री मांडल अतिशय स्थित चंद्रप्रभु जिनेन्द्राय कामबाण विनाशनाय पुण्यं नि. स्वाहा।

यह क्षुधा रोग जग में भारी सब पापों को करवाता है।
इसके वश हो जग में प्राणी नाना विध कष्ट उठाता है॥
हे! चंद्रप्रभु मांडलवाले इस जग वैरी का नाश करो।
बरफी आदि मैं भेंट करूं, मम आत्म भुवन में वास करो॥५॥

ॐ ह्री श्री मांडल अति. स्थित चंद्रप्रभु जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

हे मोह महातम जग वैरी, यह उल्टी रीति चलाता है।
बहुभांति के मत सम्प्रदाय यह मोह रिपू चलवाता है॥
हे चन्द्रप्रभु मांडल वाले जग मिथ्यातम का नाश करो।
घृत दीपक चरणों मे लाया मेरा सद्ज्ञान विकास करो॥६॥

ॐ ह्री श्री मांडल अतिशय स्थित चंद्रप्रभु जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वापामिति स्वाहा।

Scanned with CamScanner

है कर्म सभी नाटक कर्त्ता ये जग में नाच नचाते हैं।
नाना गतियों में कष्ट दिला सब प्राणी को भटकाते हैं॥
हे चन्द्रप्रभु मांडलवाले इन जग दुःखों का नाश करो।
मैं धूप दशांग चढ़ाता हूँ, मम अशुभ कर्म का नाश करो॥७॥
ॐ ह्री श्री मांडल अतिशय स्थित चंद्रप्रभु जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं नि...।

समता फल मोक्ष सुफल जग में, अध्यात्म ज्योति जगाता है।
समता रस को पाने वालों, ऋषियों से पूजा जाता है॥
हे चन्द्रप्रभु मांडल वाले, हम मोक्ष महल में वास करे।
हम आम अनार चढ़ाते हैं, निज मोह कर्म का त्रास हरें॥८॥
ॐ ह्री श्री मांडल अतिशय स्थित चंद्रप्रभु जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं नि.।

जल, चंदन, अक्षत, पुष्प, दीप, नैवेद्य, धूप, फल आये है।
हम अष्ट द्रव्य का थाल भरे, निज भाव संजोकर आये हैं॥
है चन्द्रप्रभु मांडल वाले, मम विनय भक्ति स्वीकार करो।
मैं पद अनर्घ्य को प्राप्त करूँ, मम विनय अर्घ स्वीकार करो॥९॥
ॐ ह्री श्री मांडल अतिशय स्थित चंद्रप्रभु जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अनर्घ्यं नि. स्वाहा।

पंचकल्याणक

(तर्जः- घुंघरु छम छमा छम छन नन नन बाजे रे-२)

चन्द्रप्रभुजी गर्भ में आये सुर नर नाचे रे-घुंघरु...
चैत वदि पांचे के शुभ दिन, माता उर प्रभु आये-
चन्द्रपुरी में खुशियाँ छाई, सुर नर गाये रे-घुंघरू.....
ॐ ह्री श्री चैत्र कृष्णा पंचम्यां गर्भ मंगल प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घं नि. स्वाहा..... ॥१॥

चौपाई

(तर्जः- लिया प्रभु अवतारऽऽ जय-जयकार-३)

अष्टम तीर्थ जहाज ऽऽजय-जयकार-जयजयकार-जयजयकार
पौष वदि एकादशी के दिन जन्म लिया है चन्द्रप्रभु जिन-२

Scanned with CamScanner

सब दुःख संकटहार जय-जयकार-३
स्वर्ग सहित सौधर्म भी आये, मेरु पर अभिषेक करायें
सब जन मंगलकार ऽऽजय-जयकार-३

ॐ ह्री श्री पौषकृष्णा एकादश्या जन्म मंगल प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घं नि. स्वाहा।

गीता छंद

तज राजपात समाज सब निर्ग्रन्थ पद धारा महा।
शुभ पौष वदि एकादशी को श्रमण पद अद्भुत लहा॥
प्रगटी सभी ही ऋद्धियाँ सेवा करें सब सिद्धियां।
चन्दा प्रभु के त्यागसे किंकर बनी सब लब्धियां॥

ॐ ह्री श्री पौषकृष्णा एकादश्या तपो मंगल प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घं नि. स्वाहा।

अडिल्ल छन्द

शुक्ल ध्यान धर जिनवर ध्यानी बन गये।
चार घातिया नाश ज्ञानी बन गये॥
फागुन श्याम सप्तमी मंगल दिन महा।
चन्द्रप्रभु ने शुभ तीर्थंकर पद लहा॥

ॐ ह्री श्री फाल्गुन कृष्ण सप्तम्यां ज्ञान मंगल प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घं नि. स्वाहा।

अवतार छन्द

ना जाओ प्रभु मेरे सब भक्त बुलाते हैं।
हम खेवटिया के बिन जग में भरमाते हैं॥
निज धर्म सभा विघटा सम्मेद गिरी आये।
फाल्गुन सुदि सातें को वे शिवपुर को जाये॥
कर सकल कर्मका नाश शिवपुर जाते हैं॥ हम खेवटिया..

ॐ ह्री श्री फाल्गुन कृष्ण सप्तम्यां मोक्ष मंगल प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घं नि. स्वाहा।

जाप्य : ॐ ह्रीं चन्द्रारिष्ट निवारकाय श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः
(९, १८, २७ या १०८ बार)

Scanned with CamScanner

जयमाल (दोहा)

चन्द्रप्रभु जिननाथ को बारम्बार प्रणाम।
गाऊं जय गुण मालिका सफल हो मम काम॥

(त्रोटक)

जय चन्द्रप्रभो जय-जय स्वामी, वंदन करते मुनि शिवगामी।
जय तीन लोक के भरतारी, जय तुम दर्शन संकटहारी॥१॥
तुम चन्द्रपुरी अवतार लिया, मां सुलक्ष्मणा को धन्य किया।
तव जननी हो वह धन्य हुई, जग जननी पद के योग्य हुई॥२॥
स्वर्गों में तब विक्षोभ हुआ, देवों ने कारण शोध लिया।
सौधर्म शचि संग आन खडे, जिन मात-पिता के शरण पड़े॥३॥
मेरु पर तव अभिषेक हुआ, भव्यों को दर्शन लाभ हुआ।
राजा का पद स्वीकार किया, सुख समता का विस्तार किया॥४॥
दोषों का ताप हरा उनने, सत न्याय प्रचार करा उनने।
फिर जगसुख नश्वर भान हुआ, औ आतमसुख का ज्ञान हुआ॥५॥
तब मुनिपद उनने धार लिया, संसार सलिल को पार किया।
तीर्थंकर बनकर प्रभुवर ने, जिन तीर्थ बताया फिर तिरने॥६॥
गिरि सम्मेदाचल गये प्रभो, सब दूर भगायें कर्म विभो।
प्रभु योग निरोध किया वन में, अरु सिद्ध बने वे कुछ क्षणमें॥७॥
जिनवर की अनुपम है महिमा, तव शरणागत पाये गरिमा।
गुरु समन्तभद्रने नाम लिया, भूमण्डल पर यशगान किया॥८॥
सोनागिर देहरा आदि में, सम्मेद शिखर बड़वानी में।
सब क्षेत्र बडे मनहारी हैं, दुःखियों के संकटहारी हैं॥९॥
महाराष्ट्र देश मांडल ग्रामा, तुम अतिशय दर्शन नयन रामा।
पन्द्रह सौ वर्ष पूर्वसे ही, जिन प्रतिमा महिमा राज रही॥१०॥
यहां क्षेत्रपाल पांचों शोभे, जिनका दर्शन भवि चित् लोभे।
वे हर मावस तुम दर आवें, जिन शासन महिमा दर्शावें॥११॥

Scanned with CamScanner

वे गीत आरती नृत्य करें, तुमको सेवे सुख दिव्य वरें।
मुनि आदिक ने अतिशय देखा, फिर निज प्रजा से उल्लेखा ॥१२॥
गणिनी माँ राजश्री को भी, तुम दर पे जीवन ज्योति मिली।
तब भक्तों ने जयघोष किया, त्रय छत्र प्रभु को भेंट किया ॥१३॥
इत्यादि तुम अतिशय स्वामी, भवि जीवों को शिवसुख गामी।
प्रभु मेरा संकट त्रास हरो, मम हृदय कमल में वास करो ॥१४॥
कुछ भौतिक सुख की चाह नहीं, मैं चाहूं भाव की राह नहीं।
यह 'गुप्तिसूरि' जिन भक्ति करें, जिन पद में रह शिव शक्ति वरे ॥१५॥

ॐ ह्री श्री मांडल अतिशय क्षेत्र स्थित श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।

धत्ता

जिन प्रभुवरचंदा, नाथ जिनन्दा, विनय सहित तुम शरण खडे।
दुःख भंजनकारी, संकटहारी, हे! त्रिपुरारि भक्ति करें ॥

(शांतये शांतिधारा दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत)

चन्द्रप्रभुजीकी आरती

लेखिका-गणिनी आ.श्री राजश्री

(तर्ज-मैं तो आरती उतारूं रे.....)

मैं तो आरती उतारूं रे, चन्द्रप्रभु स्वामी की-२
जय-जय-जय चंद्रप्रभु जय जय हो-२
माँ सुलक्षणा के लाल, प्रभु जी तुम प्यारे-२
पिता महासेन के बाल, चंद्र प्रभु न्यारे ॥ चंद्र प्रभु-२
झम-झूम भक्ति करें, इन्द्र सब नृत्य करें-२
गर्भ में आये रे-प्रभुजी गर्भ.....२॥
इन्द्रों ने जाना आज, प्रभु ने जन्म लिया।
मेरू पर्वत पर जाय, प्रभु का कलश किया। प्रभुका....२
भक्ति करो गाओ आज, जमकर सजाओ साज।
चन्द्रपुरी नगरी में.... हो प्रभु जी चंद्रपुरी।
इस मांडल क्षेत्र में आज शुभ अतिशय भारी।
तुम अतिशय सुनकर दौड आये नर नारी। आये नरनारी-२

Scanned with CamScanner

अमावस को भीड़ भरे, सब मिल के भक्ति करें-२
मांडल में आये रे हो प्रभुजी मांडल
श्री क्षेत्रपाल मनहर भी पांच प्रभु तुम द्वार खडे।
जागृत मूरत सुखकार सब जन पाय पड़ें। सब जन-२
होय दिव्य चमत्कार, लोग करें नमस्कार-२
मांडल में आये रे-हो प्रभुजी मांडल
हे चन्द्रप्रभु जिनराज, आये शरण तेरी
तोड़ो मम मोह दीवार छूटे भव फेरी. छूटे.....२
आओ 'राज' दर्श करे प्रभुवर की भक्ति करें-२
जीवन सुधारो रे हो प्रभुजी जीवन-२

"श्री चंद्रप्रभु चालीसा"

दोहा

मांडल के चन्दा प्रभु अतिशयवान महान्।
क्षेत्रपाल पांचो यहां करें, सर्व दुःख हान्॥
हर अमावस को क्षेत्र पर मेला लगे विशाल।
अर्चन पूजन जाप कर होते भक्त निहाल॥

चौपाई

जय जिन चन्दा भाग्य विधाता, शशि सम शीतल शांति प्रदाता।
रूप मनोज्ञ जिनेश्वर तेरा, हरे जगत का कर्म अंधेरा॥
चैत वदि पंचम तिथि न्यारी, माँ सुलक्षणा उर अवतारी।
गर्भोत्सव त्रिभुवन में छाया, सुर धनपति ने हर्ष मनाया॥
पन्द्रह मास रतन बरसाये, पौष वदि ग्यारस तब आये।
चन्द्रपुरी तब नाचे गाये, चन्द्रपुरी में चंदा आये॥
शचि सूरपति ऐरावत लाये, जन्मोत्सव नर देव मनाये।
इक सहस्त्र वसु कलश सजाये, मेरु पर अभिषेक करायें॥
चन्द्र असंख्यों जिनसे हारे, उनसे सुन्दर चन्द्र हमारे।
खानदेश में मांडल ग्रामा तहां दिगम्बर तीर्थऽभिरामा॥

Scanned with CamScanner

नदी पांजरा बहे यहां ही, प्रभु का अतिशय कहे सदा ही।
मांडल में प्रतिमा अतिशायी, क्षेत्रपाल पूजित सुखदायी॥
श्याम वर्ण मूरत मनहारी, चन्द्र रश्मि मस्तक पर भारी।
डेढ़ हजार वर्ष पहलेकी यह प्रतिमा जन जन हितकारी॥
पांचो क्षेत्रपाल यहां आते, चन्द्र प्रभु की भक्ति रचाते।
हर अमावस यह अतिशय होवें, दिव्य ज्योति मंदिरमें होवे॥
घुंघरु डमरू घंटा बाजे, तुरही वीणा बंशी बाजे।
गीत आरती नृत्य रचावें, पुण्य बंधका योग जुटावें॥
पंच देव कई रूप बनाते, भक्तों को दर्शन दे जातें।
चन्द्रारिष्ट हरें जिन चन्दा, नाशे नवग्रह का सब फन्दा॥
मंद भाग्य का भाग्य जगायें, निर्धन को धनवान बनायें।
मंदबुद्धि की प्रज्ञा जागे, ज्ञानवरण तिमिर सब भागे॥
दृष्टि होन लोचन पा जायें, बहरे गूंगे पूजन गायें।
पंगु भी यहां सरपट दौडे सब संकट तुम दर दम तोडे॥
अल्प मृत्यु का भय जिन नाशे, महाव्याधियां आप विनाशे।
हृदयाघात कुष्ठ गुर्दादी, हरे भयानक तनकी व्याधी॥
मानस आध्यात्मिक बाधायें, नाम तुम्हारा उन्हें नशायें।
भूत प्रेत व्यंतर की छाय, हरें आप सबकी दुर्माया॥
सागर बीच फसा दुखियारा, या सरिता में वेग अपारा।
कूप खान में भय प्राणोंका, विषधरके तीखे दादढोंका॥
सब संकट जिन नाम नशायें, सहज सरल सुख में पहुंचाये।
जो दुर्गम वन में भटका हो, हिंसक जीव मध्य अटका हो॥
दावानल प्राणों का हर्ता, उसे हरें जिन संकट हर्ता।
वाहन गर दुर्दात भिड़े हों, जीवों के मृतपिण्ड पडे हो॥
महा विषैली गैस रिसी हो, जीने की नहीं आश बची हो।
या भीषण संग्राम छिड़ा हो, शस्त्रों का अम्बार पड़ा हो॥
उस क्षण जो तुमको ही ध्याता, सर्व आपदा पर जय पाता।
आंधी झंझावात चली हो ताश पत्र सम धराहिलो हो॥

Scanned with CamScanner

विद्युत्पात पड़े जल धारा, मूसल सम ओलो की धारा।
इत्यादिक सब पाप नशायें, जो श्रद्धा से तुमको ध्यायें॥
भव्य जीव सम दर्शन पाये, रत्नत्रय निधी को अपनायें।
श्रमण श्रेष्ठ जाग में कहलावे, केवल ज्ञान सूर्य प्रगटावें॥
"गुप्तिनंदी" भी तुमको ध्याये, तुम चरणों में चित लगायें।
नाथ आपका पथ हम पायें, क्रमसे जिन गुण निधि प्रगटायें॥

चालीसा जिन चन्द्र का करे पाठ जो भव्य
उभय लोक सुख लाभ करे, पाये शिव सुख नृत्य
फाग सुदी अठवीर सन, पच्चिस सौ अठबीस
चालीसा चन्द्रेश का, लिखे "गुप्ति" नत शीश

आरती

ॐ जय चंद्रप्रभुदेवा, स्वामी जय चंद्रप्रभुदेवा।
आरती तुम्हारी उतारूं, आरती तुम्हारी उतारूं॥
जय जय जिन देवा..... ॐ जय चंद्रप्रभुदेवा...
कासी चंद्रपुरी में जनमें, शोभा अति भारी, २
देव करे जन्मोत्सव, देव करे जन्मोत्सव,
सब संकट हारी॥ ॐ जय चंद्रप्रभुदेवा॥१॥
महाराष्ट्र के खानदेश में, मांडल अति भारी, २
चंद्रप्रभु जिन शोभे, चन्द्रप्रभु जिन शोभे,
अतिशय है भारी॥ ॐ जय चंद्रप्रभुदेवा॥२॥
क्षेत्रपाल का चमत्कार है, अतिशय अति भारी, २
मनवांछित फल पुरे, मनवांछित फल पुरे,
आनन्द अति भारी॥ ॐ जय चंद्रप्रभुदेवा॥३॥
हर महिने का कृष्णपक्ष की अमावस्या, २
देव करे सब अतिशय, देव करे सब अतिशय,
इच्छा पूरी करे॥ ॐ जय चंद्रप्रभुदेवा॥४॥

Scanned with CamScanner

भक्ति भाव से जो कोई आवे, मनवांछित पावे,२
कुन्थुसागर की इच्छा, कुन्थुसागरकी इच्छा,
मोक्षपुरी पावे॥ ॐ जय चंद्रप्रभुदेवा॥५॥

॥ इति ॥

पद्मावती पूजा

छप्पय

जग जीवन कौं शरण हरण भ्रमतिमर दिवाकर।
गुण अनंत भगवंत कंथ शिवमणि सुखाकर॥
किशन बदन लजिमदन कोटिशशि सदन बिराजैं।
उरगलच्छन पगधरन कमठ मदखंडन साजैं॥
अनंत चतुष्टय लक्षिकर भूषित पारस देव।
त्रिविधि नमौं शिरनायके करूं पद्मावति सेव॥१॥

दोहा

आह्वानन बहुविधिकरों इस थल तिष्ठो आय।
सत्य मात पद्मावती दर्शन दीजो धाय॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पार्श्वनाथ भक्ताधरणेन्द्र भार्या श्री पद्मावती महादेव्यै अत्रावतार संवौषट् आह्वानन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

गंगा ह्रदनीरं सुरभि समीरं आक्रत क्षीरं ले आयो।
रतनन की झारी भरि करि धारी आनंदकारी चितचायो॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पार्श्वनाथ भक्ता धरणेन्द्र भार्यायै श्री पद्मावत्यै महादेव्यै जलं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

गोशीर घिसायो केशर लायो गंधव नायो स्वच्छ मई।
आताप विनाशे चित हुल्लास सुरभि प्रकाशे शीतमई॥ पद्मावती..

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पार्श्वनाथ भक्ता धरणेन्द्र भार्यायै. ॥चंदनं॥

मुक्ता उनहारं अक्षतसारं खंड निवारं गंधभरे।
शशि ज्योतिसमानं मिष्टमहानं शक्तिप्रमानं पुंजधरे॥ पद्मावती..

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पार्श्वनाथ भक्ता धरणेन्द्र भार्यायै. ॥अक्षतं॥

Scanned with CamScanner

चम्पा रु चमेली केतकिसेली गंधजुफैली चहुं ओरी।
चितभ्रमरलुभायोमनहरषायोतुमढिंगआयोसुनमेरी ॥पद्मावती..
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पार्श्वनाथ भक्ता धरणेन्द्र भार्यायै. ॥पुष्पं॥

घेवर घृतसाजे खुरमा खाजे लाडू ताजे थार भरे।
नैनन सुखदाई तुरत बनाई कीरत गायी अग्र धरे॥ पद्मावती..
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पार्श्वनाथ भक्ता धरणेन्द्र भार्यायै. ॥नैवेद्यं॥

दीपकशशिजोतं तमक्षयहोतं ज्ञान उद्योत छाय रह्यो।
ममकुमतविनाशीसुमतप्रकाशीसमताभाषीसरनलह्यो ॥पद्मावती..
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पार्श्वनाथ भक्ता धरणेन्द्र भार्यायै. ॥दीपं॥

कृस्नागर धूपं सुरभि अनूपं मनवचनरूपं खेवत हौं।
दशदिशअलिछायेंवाद्यबजायेतुमचरणाग्रेसेवतुहौं ॥पद्मावती..
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पार्श्वनाथ भक्ता धरणेन्द्र भार्यायै. ॥धूपं॥

बादामसुपारी श्रीफलभारी आनन्दकारी भरिथारी।
तुम चरन चढाऊं चित उमगांउ वाछितपांउ बलिहारी॥ पद्मावती..
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पार्श्वनाथ भक्ता धरणेन्द्र भार्यायै. ॥फलं॥

जलचंदन अक्षतपुष्प चरुचितदीपधूप फललायधरे।
शुभ अर्घ बनाये पूजन धायो तूर बजायो नृत्य करे॥ पद्मावती..
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पार्श्वनाथ भक्ता धरणेन्द्र भार्यायै. ॥अर्घं॥

जयमाला

श्री पद्मावतिमाय गुण अनेक शोभते।
अववर्णन जयमालके सुनौं सुजन मनलायके ॥१॥

पद्धरि छन्द

जय तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ प्रणमूं तिरकाल नवायमाथ।
तिन मुखते वानी खिरीसार सब जीवनकों आनन्दकार ॥२॥

छदमस्थ अवस्थाको जुवर्ण सुनियो भविचित लगायकर्ण।
इकदिन हयचढि पार्श्वनाथ अरुसखा अनेके लिये साथ ॥३॥

Scanned with CamScanner

गंगातट आये मोदठान तहांतापस कुतप करै अयान।
इक काष्टथूलमैं नागदोय तापसको कुछनहिं ज्ञानसोय ॥४॥

वह काष्ठ अग्निमें दयो लगाय उरगनिकों संकट परौआय।
यह भेद जान श्रीपार्श्वदेव तापसके ढिंग आये स्वमेव ॥५॥

तासों बोले नहिं ज्ञानतोय हिंसामयतप करिकुगतिहोय।
चीरौ जुकाष्ठतत्कालसोय काढेसुनागिनीनाग दोय ॥६॥

तिनकेजुकंठगतरहे है प्रान पारसप्रभु करुणाधर महान।
तिनके वचनामृत हैं महान निर्मल भावोंसे सुने कान ॥७॥

तत्काल पुन्य समुदाय होय उत्तमगति वंध कियो सुदोय।
सन्यास कियो मनको लगाय धरणेन्द्र पद्मावति लहाय ॥८॥

सोही पद्मावतिमात सार नित प्रति पूजौं मैं बारबार।
बहुतें जीवन उपकार कीन, मेरीबारी मैं बहुत दीन ॥९॥

जलआदिकवसु विधि द्रव्य लाय गुणगान गाय वादि।
त्र वजाय, घननननघंटा वजंता तननननतुरपुरैं तरंत ॥१०॥

ताथेइ थेइ घुन्धु रु करत, झुकि झुकि झुकि फिर पग धरंत।
बाजत सितार मिरदंग साज, बीना मुरली मधुरी अवाज ॥११॥

करि नृत्यगान बहु गुणबखान, कहलौं महिमा वरनें अयांन।
सेवक पर सदा सहाय कीन, विनती मोरी सुनियों प्रवीन ॥१२॥

घत्ता

पद्मावति माता तुमगुण गाता आनंद दाता कष्ट हरौ।
सुनि माता मोरीशरण जु तोंरी लखिमम ओरी धीर धरों ॥१३॥

पूर्णार्घं

दोहा

हे माता मम उर विषैं पूरण तिष्टौ आय।
रहै सदैव दयालुता, कहता सेवक गाय ॥१४॥

इत्याशीर्वादः।

Scanned with CamScanner

पद्मावती स्तोत्र

श्री शुक्ल पद्मावति जननि ममहृदयवसी कमलासनी।
ध्याउं निरंतर भक्त पारसनाथ ज्योति प्रकाशिनी॥
तुम जैनदिव्य सर्व उत्तम सकल मंगल दाय हो।
जिन धर्मधारकभविनकी तुम करतिनित्य सहाय हो॥
त्रैलोक्य पावन परम तीर्थंकरजु पार्श्वनाथ जी।
उपसर्ग कीना कमठ ने तुम ही निवारो हाथ जी॥
उस वक्त भी सहायतत् छिनहे चिजयमाता तुम्हीं।
किरणकरौ मम दुख हरौ चरनों परौ देवी तुम्हीं॥
कल्यान भाजन न्याय शील प्रगट पर उपकारणी।
रक्षाकरौ निजवत्स की सब ही के कारज सारणी॥
चंडी भवानी भूत यज्ञ पिशाच सर्व विनाशिनी।
ध्याउं निरंतर भक्त पारसनाथ ज्योति प्रकाशनी॥
शशिकीर्तिबहु दिशा विस्तरी सुमिरनसे जिनके मन भरी।
तुम धवल यश छायो अनुपम, अंग वात्सल तन धरौ॥
हितकियौ परधर्मज्ञ जन जब प्रगट हो संशय हरौ॥
श्री पात्र केशरि के करणमें कह गई कमला वती।
श्रद्धा करावन जैन लिखि श्लोक फण मंडित सती॥
इस भांति जीव अनेक को उपकार तुम करती भई।
बारी हमारी आगई अब ढील का अवसर नई॥
मूरत का दर्शन देहु माता जैन की तुम शासनी।
ध्याउं निरंतर भक्त पारसनाथ ज्योति प्रकाशिनी॥२॥
इस संस्थ ब्रह्मचारी श्री अकलंक जी उत्तम लसैं।
शास्त्रार्थ कीन्हा मास छह तारा जु देवी घट वसे॥
हे मात तुम स्मरण में प्रत्यक्ष कीन्ही सहायता।
शुभ विजय पाई जैन धर्म प्रचार की सर्वत्रता॥
हे अम्बिके वागेश्वरी कमलेश्वरी पद्मावती।
महिमा कहां लग वर्णउं, तुम विमल ज्योति बिराजती॥

Scanned with CamScanner

हे मात अपनो जानकर मुझ बाल पर करुणा करो।
कीजै सफलता कार्यकी शुभ पूर्ण मंगल विस्तरौ॥
तुम्ही को नितरटता रहूँ प्रत्यक्ष हो जिनशासनी।
ध्याउं निरंतर भक्त पारसनाथ ज्योति प्रकाशिनी॥३॥
जब सेठ गुणधरकौं परो संकट महा दारिद तनौं।
तुमहीने लक्षिदई अतुल अरुदंत रत्नजड़ित धन॥
पाषाण पारस के भिड़नते लोह कंचन होत है।
मेरे हृदयदांतों विराजत क्यों न हो उद्योत है॥
तुम गुण धरन सब सुख करन आयो सरन तुमरे प्रमा।
प्रतिपाल कर मम दुःख हरो मुहि दउ वर माता रमा॥
तमरो करूं सुमिरन सदा आशा लगी तुम दरश की॥
रोमा बलि फुल्लित भई है वार आई हरषकी॥
किरपा हमारीपै करो पारसप्रभु की दासनी।
ध्याउं निरंतर भक्त पारसनाथ ज्योति प्रकाशिनी॥४॥

॥ इति पद्मावती स्तुति समाप्तम्॥

श्री क्षेत्रपाल पूजा

क्षेत्रपाल जज्ञे स्मिन, अत्र क्षेत्राधि रक्षणे।
बलिं ददामि यस्याग्रे, वेद्यां विघ्न विनाशिने॥

ॐ क्लीं आं क्रों ह्रीं अत्र क्षेत्रपाल कुंमुदाजन चामर पुष्पदंत जय विजय अपराजित माणभद्र पंच क्षेत्रपालाय अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वानं, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्, सन्निधिस्थापनं।

सद्येनाति सुगंधेन, स्वछेन बहुलेन च।
स्नापनं क्षेत्रपालास्य, तैलेन प्रकरोम्यहं॥१॥

ॐ क्लीं आं क्रीं क्रीं अत्र क्षेत्रपाल कुंमुदाजन चामर पुष्पदंत जय विजय अपरा जित माणभद्र पंच क्षेत्र पालाय॥ तैलेम्॥

सिंदरै रारूणा कारे पीत वर्णौं सुसंभवै।
चर्चनं क्षेत्रपालास्य, सिंदूरैः प्रकरोम्यहं॥२॥ सिंदूरं॥

Scanned with CamScanner

सद्य पूतैः महास्निग्धैः, समांगल्यै सपिंडंकै।
क्षेत्र पालमुखेदद्यात् गुडं विघ्न बिनाशिनै ॥३ ॥ गुड ॥
तिल पिजस्तु पिंडेन माषस्य वकुलादिभिः।
ददामि क्षेत्रपालस्य बिस्व विघ्न विनाशिने ॥४ ॥ तिलं ॥
भो क्षेत्रपाल जिनश्यति मंकभाला,
दंष्ट्रा कराल जिनशासनेवैंरि काला,
तैलाहि जन्मगुड चंदनपुष्प धूपैः,
भौग्यं प्रतिक्ष जगदीश्वर जज्ञ काले ॥ अर्घं ॥५ ॥

३ (अथाष्टक)

क्षीर हीर गौर नीर पुर वारि धारया।
मंद बुंद चन्दनादि सौर भेन सारया ॥
भूत प्रेत राक्षसादि दुष्ट कष्ट नाशनं।
शांति सिद्धि ऋद्धि वृद्धि क्षेत्रपाल चर्चनं ॥१ ॥ जलं ॥
अर्क तर्क वर्जनै रनर्घ चन्द्रनन्द्रवैः।
कुंकुमादि मिश्रितै रएद्धि षट् पदा श्रितैः ॥ भूत प्रेत ॥२ ॥ चंदनं. ॥
औषधीश सिंधुफेन हार भासमुज्वलै।
अछितै सुलक्षणः रजीति खंड वजितै ॥ भूत प्रेत नाशनं. ॥३ ॥ अक्षतं ॥
पारि जात वारि जात कुंद हेम केतकी।
मालती सुचंपकादि सारपुष्प मालया ॥ भूत प्रेत नाशनं. ॥४ ॥ पुष्पं ॥
व्यंजनेन पायसादिभिः सम लसभद्रसै।
मोदकोदनादिस्वर्णभाजनंसुसंस्थितैः ॥भूतप्रेतनाशनं. ॥५ ॥नेवैद्यं ॥
रत्न धेनु सर्पिषादि दीपकै सिखोज्वलैः।
वटि धार तोय कोप कपरूप वर्जिते ॥ भूत प्रेत नाशनं. ॥६ ॥ दीपं ॥
सल्पिती सिता गुरु प्रधूप केल मिश्रितैः।
वाद्यमान वर्धमान माननी मनोहरै ॥ भूत प्रेत नाशनं. ॥७ ॥ धूपं ॥
श्रीफल, भ्रकर्करी सुदाडिमादिभिः फलैः।
स्वादमि सौरभादिष्ट जंजरांदि मोदनः। भूत प्रेत नाशनं. ॥८ ॥ फलं ॥

Scanned with CamScanner

जीवन सिताऽगुरु द्रवांक्षतैः प्रसून कैः।
चारू चरु प्रदीपकैः धूप कै फलैत्कर॥ भूत प्रेत नाशनं. ॥९॥ अर्घं॥

लक्ष्मी धान्य करं जगत् सुख करं सदीर्घ कायांवरं।
रात्रौ जागरवाहनं सुखकरं बर वार पाणी धरं॥
निर्विघ्न भयनाशनं भयहरे भूतादि रक्षाकरं।
वंदे श्री जिन सेवक हरिहरे श्री क्षेत्रपालं परे॥

जयमाला

सुरासुर खेचर पूजित पाद, गुणाकर सुन्दरं कृत शुभनाद।
मनहर पन्नगकंठ विशाल, सदा शुभ हो जय क्षेत्र सुपाल॥
सुदाकिन शाकिन नासन वीर, सुजाकिन राकिन भ्रंशन धीर।
अनोमम मस्तक शोभित बाल, सदा शुभ हो जय क्षेत्र सुपाल॥
सुलंकिन हाकिनि पन्नग त्रास, कु भूपति तसकर दुर्भिक्ष नाश।
निशाकार शेखर मंडित भाल, सदा शुभ हो जय क्षेत्र सुपाल॥
सुमुद्गल साब्दल सूकर वृंद, सुराक्षस भोजश दुर्लभ केद।
सदामल कौमल अंक विशाल, सदा शुभ हो जयक्षेत्र सुपाल॥
सु चित्रक कुंजरशागर पार, सु दुर्जन सैवन सत्रु संहार।
सुकंपित किंनर भूत रसाल, सदा शुभ हो जय क्षेत्र सुपाल॥
सुऋद्धि समृद्धि सुदायक सूर, सुपुत्र सुमित्र कलित्र कपूर।
सुरजित वासुर कांति विशाल, सदा शुभ हो जय क्षेत्रसुपाल॥
सु कुंदर कुंडल हार सु वाद्य, सुसेषर सुस्वर किंकिंनि नाद।
भय कर भीषण भासुर काल, सदा शुभ हो जय क्षेत्र सुपाल॥
सु कामिनी खेलत दिव्य शरीर, सु बहिन हासन मोदन धीर।
सु भाषन रोजत विश्व विचाल, सदा शुभ हो जय क्षेत्र सुपाल॥
सुथापित निरमल जैन सुवाक्य, न कंपित दुर्भिक्षदुततर साक्य।
प्रकाशित जैन सु धर्म रसाल, सदा शुभ हो जय क्षेत्र सुपाल॥
सुभाषित श्रेय सु भव्य सुवंश, महोदय जैन सरोवर हंस।
महा शुभ सागर केलि विसाल, सदा शुभ हो जय क्षेत्र सुपाल॥

Scanned with CamScanner

घत्ता

असम सुख सारं, त्रीक्षां द्रषा करालं।
रचकर करज डीलं, दीर्घ जिव्हा करीलै॥
सुघट विक्रत चक्र, शांति दास प्रशस्यं।
भजतु नमतु जैने, भैरवं क्षेत्रपाल॥

क्षेत्रपाल स्तुति

क्षेत्रपाल तुम रक्षा करते, भवि जीवन के दुःख सब हरते।
जो जिन भक्त करे मन लाई, तिन ऊपर जब संकट आई॥
तिन की तुमने रक्षा कीनी, दुःख कौ टारि शांति तुम कीनी।
दुर्जनमोचन शत्रु बिदारक, रिद्धि सिद्धि तम सब सुख दायक॥
पुत्र कनित्रनारि को देवो, धन संपति सुख सब ही देवो।
भूत प्रेतादिक सब भय मानै, दुर्भिक्ष आदिक दुःख सब हानै॥
जो तुम कौ धर ध्यान मनावै, उसकी सब वांक्षा हो जावै।
तुमरे नाम लेत से राई, दुःख सब छिन में जाय पलाई॥
क्षेत्रपाल पूंजूं जिन सेवक, नर अरु नारि बाल तुम सेवक।
इत्यादिक कहां तक गुण गाउं, मन वांछित वर तुम से पाउं॥

क्षेत्रपाल स्तोत्रं

यं यं यं यक्षरूपं दशदिशि धगितं भूमिकंपायमानं।
सं सं सं संहारमूर्ति शिरमुकुटजटाशेखरं चंद्रबिंब॥
दं दं दं दीर्घकायं विकृतनरमुखं उर्द्धरोमं करालं।
पं पं पं पापनाशं, प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालं॥१॥
रं रं रं रक्तवर्णं किरिकिरिततनुं तीक्ष्णदंष्ट्राकरालं।
घं घं घं घंसघोषं धगधगघटितं घर्घरारावनादं॥
कं कं कं कपालधारं धगधगद्यगतिं ज्वालितं कामदेहं।
तं तं तं दिव्यदेहं, प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालं॥२॥
लं लं लं लंबलंब लललल लितदीर्घजिव्हारकरालं।
धुं धुं धुं धूम्रवर्णं स्फुटविकृतमुखं भासुरं भीमरुपं॥
रुं रुं रुं रूंडमालं रुधिरमयमयं ताम्रनेत्रं करालं।
नं नं नं नग्नरुपं प्रणमितसततं भैरवं क्षेत्रपालं॥३॥

Scanned with CamScanner

वं वं वं वायुवेगं प्रलयप्रणमितं ब्रह्मरुपं स्वरुपं।
खं खं खं खंगहस्तं त्रिपुरमयमयं कालरुपं प्रदर्शं॥
चं चं चं चचलत्वाच्चलचल चलितं चालितं भूतरूपं।
मं मं मं मायरूपं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालं॥४॥
शं शं शं शंखहस्तं शशिकरधवलं यक्षसंपूर्णतेजं।
मं मं मं मायमार्य कुलमुकुल कुलं मंत्रमूर्तित्वनित्यं॥
थं थं थं भूतनाथं किलिकिलितखं गृण्ह गृण्हालवंतं।
आं आं आं अंतरीक्षं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालं॥५॥
खं खं खं खंगभेदं विषयमृकरं कालकालांतभालं।
क्षिं क्षिं क्षिं क्षिप्रवेगं दहदहदहनं नेत्रसंदीर्घमानं॥
हुं हुं हुं हुंकारनादं हरिहर हरि येएहि एहि प्रचंडं।
मं मं मं मंत्रसिद्धं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालं॥६॥
सं सं सं सांध्ययोगं सकलगुण महादेव देवं प्रसन्नं।
पं पं पं पद्मनाभं हरिहरभुवनं चंद्रंसूर्यादिनाथं॥
यै यै यै यै स्वर्यनाथं सकलसुरगणां सिद्धिगंधर्वनाथं।
रुं रुं रुं रुद्ररुप प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालं॥७॥
हं हं हं हंस हंस हसितकहाकहामुक्तयोगाट्टहासं।
यं यं यं यक्षरुपं शिरकपिलजटाबंधबंधातरहस्तं॥
रं रं रं रंगरुपं प्रहसितवंदनं पिंगकेशं करालं।
सं सं सं सं साक्षानाथं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपाल॥८॥

भैरवाष्टमिदं पुण्यं, सर्वकाले पठेन्नरः।
सर्वबाधाविनाशाय, चिंचिततार्थ॥९॥

॥ इति क्षेत्रपाल स्तोत्र संपूर्ण॥

पद्मावती आरती

जय जय पद्मावती गुणवंती सुंदर तुझी मूर्ति।
भावं करीन मी, आरति देशिल सुख संपत्ति॥ जय.॥ धृ.॥
लाउन धृत धनसाराची जोती, घेऊनिया हातीं सुरनर ओवालिती।
निजभावें जय ह्मणुनि उद्दरती॥ जय.॥१॥

Scanned with CamScanner

धरणेंद्राची तू वल्लभा, कीतिवर्णुतनुशोभा, जैसा कोमल कर्दलीगाभा
कर जोडुनी हो उभा॥ जय. ॥२॥
पार्श्वनाथाची तूं यक्षि, देइं श्रीपद् मोक्ष, अंबे तूं मजला करी रक्ष।
येता विघ्न तूं दक्ष।जय. ॥३॥
याचक-जनाचा विश्राम कामधेनु उत्तम, कल्पतरुबीजगुणधाम।
आहे अक्विल नाम॥ जय. ॥४॥
आलोंशरणासीकिंकर,उभाजोडुनीद्वयकर,रायाविनवितसेभीफार।
अंबे दे मज सार॥ जय. ॥ ५॥

क्षेत्रपाल आरती

रूम झुम रूम झुम करु आरती मणीभद्र साहेब तोरी।
बल क्षेत्रपाल साहेब तोरी॥
सकल विघनको नाश इच्छा पूरो जो मेरी॥ घृ.॥
शेंदुर उडी लगी तुमको गले मोतनकी माला।
पाये घुंघरु रूम झुम बाजे जिन मंदिर उभा॥ रूम झुम. ॥१॥
काने कुंडल रत्नजडित है गले मोतनकी माला।
सुरासुर गणधर नाचे चंद्रज्योत काला॥ रूम झुम. ॥२॥
पेली हातमें गदा बिराजे दुजी हातमें डंबरु।
त्रिजी हातमें त्रिशुल बिराजे, चौथी हातमें कमल बिराजे॥ रूम.॥
खिचडी भातमें रोट लापसी, पुरण की पोळी।
शेव सुवाली खीर खांडगोली॥ रूम झुम. ॥४॥
खिचडी भातमें रोट लापसी, पुरण की पोळी।
अनवट खाजला घेवर मिसरी बदाम चारोली॥ रूम. झुम. ॥५॥
गुजर देशमें अजब ठिकाने गौला सुंदरी।
चंद्रनाथ चैताले शोभे त्रिभुवन मंदीरी॥ रूम. झुम. ॥६॥
शाम सुंदर सुनों विजयभद्र स्वामी।
तुम चरण की सेवा हो जो पुरी जोमेरी॥ रूम. झुम. ॥७॥

Scanned with CamScanner

श्री मणिभद्र वीर स्तोत्र

ॐ नमामि मणिभद्रं, वंदे वीरं महाबलीं।
विपत्तिकाले मां रक्ष, रक्षमां देव! मणिभद्रे॥

ॐ आं क्रों ह्रीं मंत्ररूपे, महाबलीं रक्षं सदा।
मां शरणं शरणं तव, रक्षमां देव! मणिभद्रे॥

भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रः मंत्ररूपे, तव भक्ति प्रभावतः।
प्रत्यक्षं दर्शनं देहि, रक्षमां देव! मणिभद्रे॥

धर्मार्थ काम मोक्षच्चैव, कामदातृ सुखसंपदा।
महाभीति विनाशाय, रक्षमां देव! मणिभद्रे॥

झ्रां झ्रीं झ्रूँः झ्रः मंत्ररूपे, तव शरीरं सुशोभितं।
सौँ सः ते तु प्रत्यक्षं, रक्षमां देव! मणिभद्रे॥

सुखडी श्रीफलंश्चैव, कामदं मोक्षदं तथा।
आधि व्याधि विपत्ति च, रक्षमां देव! मणिभद्रे॥

राजभयं चोरभयं नास्ती, न च सर्पेण डस्यते!
सर्व मंगल कारकं देव, रक्षमां देव! मणिभद्रे॥

समाप्त

Scanned with CamScanner

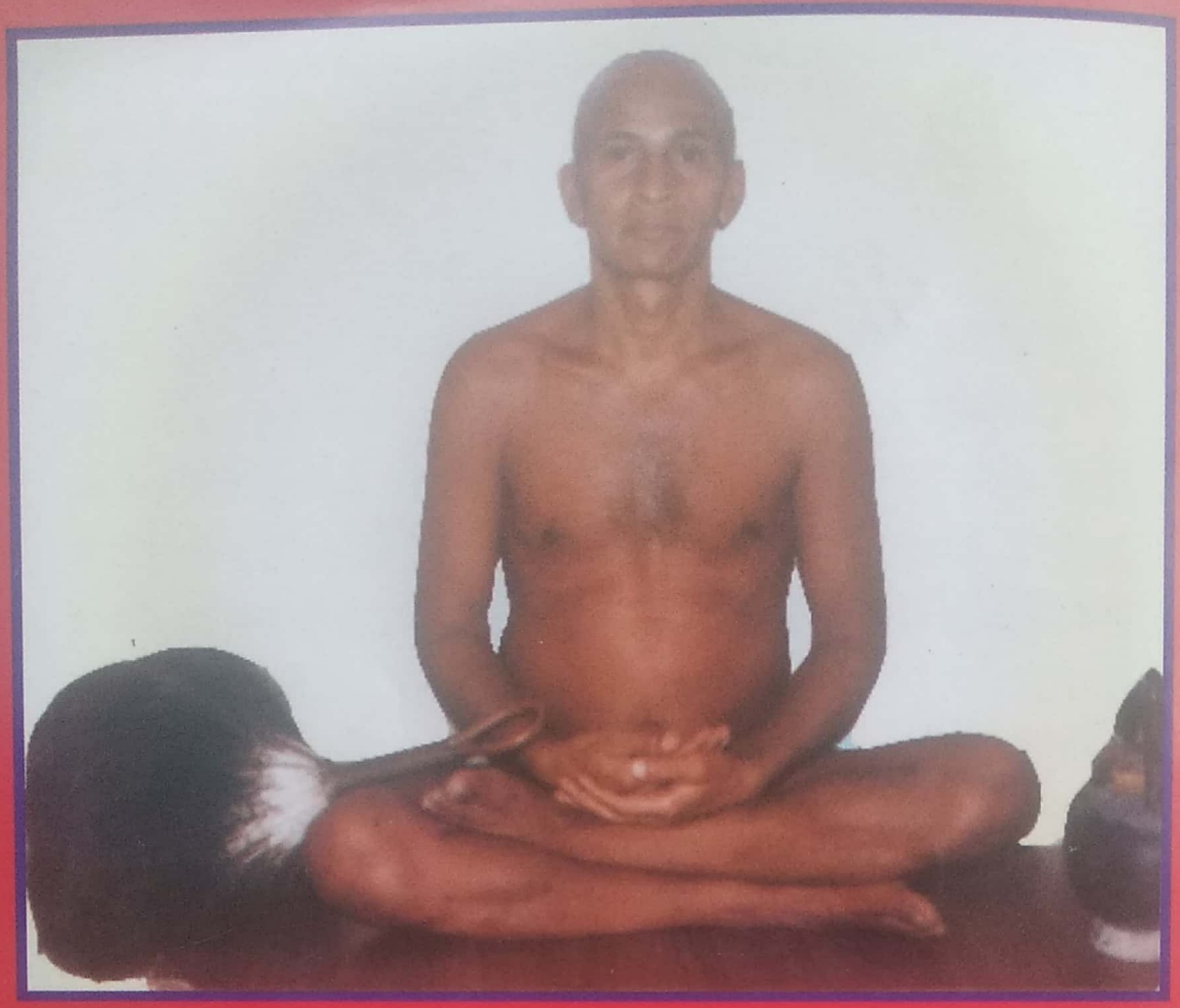

गणाधिपति गणधराचार्य १०८ श्री कुंथुसागरजी महाराज

पिताका नाम	: पंडित रेवाचंद्रजी
माताका नाम	: श्रीमती सोहनदेवीजी
जन्म स्थान	: बाठरडा (उदयपुर)
जन्म तिथी	: दि. १-६-१९४७ ज्येष्ठ शुक्ला १३, वि.सं. २००३
जन्म नाम	: कन्हैयालालजी
भाई-बहन	: एक भाई, तीन बहन
ब्रह्मचर्य व्रत	: दि. जैन सिद्धक्षेत्र पावागढ़ भगवान पार्श्वनाथके चरणोंमें
शुद्ध जल त्याग	: आचार्य सीमन्धरसागरजी एवं आचार्य सुबाहुसागरजीसे
मुनि दीक्षा	: दि. जैन अ.क्षेत्र होम्बुज पद्मावती (कर्णाटक) आचार्यश्री महावीरकीर्तिजी महाराजसे
गणधराचार्य पद	: आचार्य महावीरकीर्तिजी महाराजसे-महेसाणा (गुजरात) दि. ६-१-१९७२ माघ सुदी ६
आचार्य पद	: आ. विमलसागरजी महाराजसे, दि. १९-११-८० अकलुज
गणाधिपते पद	: अतिशय क्षेत्र जटवाडा (औरंगाबाद)

मूल्य : जीर्णोद्धारमें दान देवें।

Scanned with CamScanner